Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.249
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ2406IIV12P029

e-ISSN No. 2394-8426
June-2024
Issue–II, Volume–XII

उच्च षिक्षा – महाविद्यालय की समस्यायें एवं सुझाव (दूरस्थ अंचल के विशेष संदर्भ में)

डॉ. पदमा सोमनाथे
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)
स्व. बिंदेष्वरी बघेल शासकीय महाविद्यालय कुम्हारी, दुर्ग

Abstract

किसी भी राष्ट्र के स्वस्थ जीवन, कल्याण एवं शक्ति के लिए उच्च शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। सामान्यतया शिक्षा का लक्ष्य समाज के सदस्यों को शिक्षित एवं सुसंस्कृत बनाकर देश की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रगति का पथ प्रशस्त करना है। वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप ही उच्च शिक्षा की सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रदेश सरकार प्रयासरत है। परन्तु फिर भी आज प्रदेश के गामीण एवं दूरस्थ क्षेत्र के महाविद्यालय अधोसंरचना की कमी, प्राध्यापकों की कमी, गुणवत्ता की कमी, पुस्तकालय का अभाव, आवागमन के साधनों का अभाव, आधुनिक संसाधनों का अभाव आदि समस्याओं से जूझ रहे हैं। प्रस्तुत शोध में इन्ही समस्याओं एवं इनके प्रभावी सुझावों पर ध्यानाकृष्ट करने का प्रयत्न किया गया है।

शोध के उद्देश्य

1. ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्र के महाविद्यालय की प्रमुख समस्याओं का अध्ययन करना।
2. इन समस्याओं का अध्ययन अध्यापन पर पड़ने वाले प्रभावों को जानना।
3. इन समस्याओं को दूर करने के लिए प्रभावी सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रविधि –

प्रस्तुत शोध प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्यों के संग्रहण एवं विश्लेषण पर आधारित है। प्राथमिक तथ्यों के संकलन के लिए कुछ महाविद्यालयों में प्रत्यक्ष अवलोकन द्वारा एवं द्वितीयक तथ्यों के लिए संदर्भ ग्रंथों एवं आलेखों का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना :

"तमसो मा ज्योतिर्गमय" अर्थात् अंधकार से मुझे प्रकाश की ओर ले जाओ यह प्रार्थना भारतीय संस्कृति का मूल आधार है। प्रकाष में व्यक्ति को सब कुछ दिखाई देता है अंधकार में नहीं। प्रकाष से यहां तात्पर्य ज्ञान से है। ज्ञान से व्यक्ति का अंधकार नष्ट होता है उसका वर्तमान और भावी जीने योग्य बनता है। जीवन को प्रगति पथ पर ले जाता है। षिक्षा व्यक्ति को इसी ज्ञान के प्रकाष से शुभाशुभ भले बुरे की पहचान कराके आत्म विकास की प्रेरणा देती है। षिक्षा मानव के विकास का आधार है। षिक्षा ही व्यक्ति की दक्षताए ज्ञान एवं कौशल क्षमता का विकास करती है। इन्हीं के आधार पर व्यक्तित्व में बदली हुई परिस्थितियों के अनुसार बनने की शक्ति तथा लचीलापन आता है। देष के विकास के लिए मानवीय संसाधनो की आवश्यकता होती है। मानवीय संसाधनो के विकास का महत्वपूर्ण कार्य षिक्षा द्वारा ही सम्पन्न किया जाता है। मानवीय संसाधन की दृष्टि से उच्च षिक्षा का विषेष उल्लेखनीय स्थान है। आज के युवाओं की उच्च षिक्षा से यही अपेक्षा है कि वह उसके भविष्य को सुरक्षित मार्ग दे सके। 1 नवम्बर 2000 को अस्तित्व में आया नवनिर्मित राज्य छत्तीसगढ़ भी उच्च षिक्षा में गुणवत्ता

प्रदान करने के लिए प्रयासरत है। समय–समय पर इसके लिए विभिन्न नीतियों एवं कार्यक्रमों को लागू भी किया गया है। चूंकि प्रदेष का अधिकांष भाग विषम भौगोलिक परिस्थितियों एवं ग्रामीण क्षेत्र में बसता है। ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्र के महाविद्यालय आज भी कई समस्याओं से जूझ रहें हैं।

प्रमुख समस्याएं –

प्रदेष सरकार द्वारा ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्र में जगह.जगह महाविद्यालय खुलवा दिए है लेकिन न तो वहां पर्याप्त अधोसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध हैं, न ही पर्याप्त स्टाफ है न ही नियमित प्राचार्य और न वहां निरन्तर किसी प्रकार का निरीक्षण और मूल्यांकन सरकार द्वारा किया जा रहा है। वर्ष में यदि एक या दो बार वहां निरीक्षण किया भी जाए तो वहां की समस्याओं से पूर्णतः निपटा नहीं जा सकता है। महाविद्यालय द्वारा निरन्तर निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

- छत्तीसगढ़ में ग्रामीण क्षेत्र में महाविद्यालयों में स्वीकृत पद पर जहाँ नियमित प्राध्यापकों की कमी लम्बे समय से बनी हुई है हालांकि 2012 में लोक सेवा आयोग द्वारा प्राध्यापको की नियुक्ति प्रदेष सरकार द्वारा की गई थी परन्तु फिर भी अधिकांष महाविद्यालयो में संख्या पर्याप्त नहीं है जिस कारण शिक्षण शिक्षार्थी अनुपात अत्यंत चिन्ताजनक स्थिति में है। यद्यपि इसकी पूर्ति शासन द्वारा अतिथि विद्वानों एवं जनभागीदारी शिक्षकों आदि से की जा रही है। अधिकांष अतिथि विद्वान अपने ही क्षेत्र के महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य को प्राथमिकता देते है जिससे कई महाविद्यालयों में यह पद रिक्त हो जाता है और अध्यापन कार्य न होने के कारण पाठ्यक्रम अपूर्ण रह जाता है। पर्याप्त स्टाफ न होने के कारण एन.सी.सी., एन.एस.एस., रेडक्रास, कैरियर एवं मार्गदर्शन आदि यूनिट का संचालन नहीं हो पा रहा है साथ ही शिक्षकों पर अतिरिक्त प्रभार के कारण शैक्षणिक कार्य प्रभावित हो रहा है।
- अधिकांष महाविद्यालयों में आसपास के छात्र/ छात्राएं भी प्रवेष लेते हैं गांव से दूरी होने के कारण एवं आवागमन के पर्याप्त साधन उपलब्ध न होने के कारण वह नियमित रूप से महाविद्यालय में उपस्थित नहीं हो पाते हैं खासकर बारिश के मौसम में आवागमन में कठिनाई होती है जिससे उनकी पढ़ाई नियमित नहीं हो पाती है और परीक्षा परिणाम अच्छा नहीं निकलता है।
- महाविद्यालय में प्रवेष प्रक्रियाए परीक्षा फार्मए प्रवेष पत्र वितरण सभी कार्य में कम्प्यूटर इंटरनेट के माध्यम होता है अधिकांष छात्र इस प्रक्रिया से अनभिज्ञ होने के कारण प्रवेष से वंचित रह जाते है और प्रवेष नियम एवं प्रवेष तिथि आदि की जानकारी उन तक नहीं पहुंच पाती है। केन्द्र सरकार की कौषल विकास योजना के तहत अब कम्प्यूटर प्रषिक्षण की व्यवस्था ग्रामीण एवं शहरी
क्षेत्र दोनों में की जा रही है फिर भी अभी अधिकांष ग्रामीण जनसंख्या इससे वंचित है।
- छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में भवनो का अभाव है अगर कुछ भवन है भी तो वह जर्जर अवस्था में है। कुछ महाविद्यालयों का संचालन अन्य निजी भवनो में हो रहा है। कुछ महाविद्यालयों में विद्युत व्यवस्था सुचारू रूप से नहीं मिल पा रही है। भवन निर्माण के बाद भी कई ऐसे महाविद्यालय है जहां पानी एवं बिजली की सप्लाई अभी तक पूर्ण रूप से नहीं हो पाई है जिससे छात्र/छात्राओं को परेषानी का सामना करना पड़ रहा है अधिकांषतः विज्ञान संकाय का प्रायोगिक कार्य इससे प्रभावित होता है। आधुनिक तकनीक का उपयोग भी प्रयोगशालाओं में नहीं हो पाता है।

- छत्तीसगढ़ राज्य जैव विविधता से समृद्ध राज्य है। प्रत्येक महाविद्यालय में वनस्पति शास्त्र विषय से संबंधित वनस्पतिक उद्यान प्राथमिकता से विकसित किया जाना चाहिए लेकिन पानी की समस्या एवं संस्थागत स्तर पर इसमें रूचि न लेने के कारण कई महाविद्यालय में यह उद्यान विकसित नहीं किया जा सका है जिससे विद्यार्थी कई वनस्पितियों से अपरिचित हैं एवं प्रकृति के दर्शन एवं बोध, तथा पर्यावरण के महत्व को समझने से दूर होते जा रहे हैं।
- व्यक्तित्व के निर्माण में पुस्तको का स्थान महत्वपूर्ण होता है परन्तु अधिकांष महाविद्यालय में पुस्तको का अभाव है या पाठ्यक्रम अनुरूप स्तरीय पुस्तकें महाविद्यालय में उपलब्ध नहीं है जिससे छात्रो में पर्याप्त गुणवत्ता मूलक अध्यापन कार्य नहीं किया जा पाता है। पत्र.पत्रिकाएंए जर्नल्स एवं समाचार पत्र उपलब्ध नहीं है जिससे वहां के छात्रो का बौद्विक विकास नहीं हो पा रहा है।
- महाविद्यालयों में पर्याप्त बैठक व्यवस्था नहीं है और यदि है भी तो पर्याप्त फर्नीचर उपलब्ध नहीं हैं।
- कई महाविद्यालयों में पर्याप्त जल व्यवस्था का अभाव है। गर्मी के दिनो में पर्याप्त पीने का पानी छात्रा/छात्राओं को उपलब्ध नहीं हो पाता।
- ग्रामीण क्षेत्र के अधिकांष महाविद्यालय परिसर में बाउन्ड्रीवाल का अभाव है जिससे छात्र/छात्राओं को परेषानी होती है। चौकीदार भी नियुक्त न होने के कारण अधिकांष परिसर असुरक्षित है।
- अधिकांष ग्रामीण क्षेत्रीय महाविद्यालय में नेटवर्क असुविधा के कारण वाई.फॉय कनेक्टीविटी नहीं है जिससे आनलाईन प्रक्रिया में असुविधा होती है और कई सूचना छात्र/छात्राओं को समय पर उपलब्ध नहीं हो पाती है।
- ग्रामीण क्षेत्रीय अधिकांश जनसंख्या खेतिहर मजदूर है या छोटे–मोटे व्यवसाय में लगी हुई होने के कारण पढ़ाई में विशेष रूचि नहीं लेते है जो छात्र छात्राएं महाविद्यालय में प्रवेशित होते भी हैं तो परिवार की दयनीय आर्थिक स्थिति उन्हें शिक्षा से दूर कर रही है महाविद्यालय का सकल नामांकन अनुपात निरंतर कम होता जा रहा है।

प्रमुख सुझाव–

- उच्च शिक्षा विभाग को सर्वप्रथम उन महाविद्यालयों को चिन्हित किया जाना चाहिए जहाँ आधारभूत सुविधाएं यथा महाविद्यालय भवन, प्रयोगशालाएं, पीने का पानी प्रसाधन, छात्रा कामन रूम, खेल परिसर एवं खेल सुविधाएं गार्डन कम्प्यूटर, इंटरनेट, फर्नीचर, पुस्तकालय, सभागार वाचनालय, छात्रावास, केंटीन, आदि सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं चूंकि यह सभी आधारभूत सुविधाएं छात्रों के व्यक्तित्व विकास हेतु आवश्यक हैं अतः सर्वप्रथम इन आधारभूत सुविधाओं को प्रत्येक महाविद्यालय को उपलब्ध कराया जाना आवश्यक है। संबंधित महाविद्यालय की जनभागीदारी समिति के सदस्यों के माध्यम से भी इन समस्याओं को न्यूनतम संसाधनों से कम करने का प्रयास किया जा सकता है।
- महाविद्यालय में नियमित प्राध्यापकों की नियुक्ति की जानी चाहिए साथ ही प्रत्येक कक्षा के क्लासरूम को आधुनिक सुविधाओं से युक्त करते हुए प्रोजेक्टर के माध्यम से आनलाइन वर्चुअल कक्षाएं बनाकर बड़े स्क्रीन पर अध्यापन कार्य कराया जा सकता है जिससे न सिर्फ शिक्षकों की कमी को कुछ हद तक कम किया जा सकता है साथ ही छात्र भी उच्चस्तरीय व्याख्यान से लाभान्वित हो सकेंगे एवं वर्तमान मांग एवं परिस्थिति के अनुरूप प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी कर सकेंगे इसके साथ ही शहरी क्षेत्र की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में अधिक से अधिक संख्या में प्राध्यापकों को पदस्थ किया जाना चाहिए।

- यदि किसी उच्च शिक्षण संस्था को उत्कृष्टता प्राप्त करनी है तो सर्वप्रथम अपने पुस्तकालय का आधुनिकीकरण करना होगा जिसमें प्रमुख कम्प्यूराइजेशन, उचित बैठक व्यवस्था, पाठ्यपुस्तकों के अलावा सामान्य ज्ञान, राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर के दैनिक, साप्ताहिक मासिक समाचार पत्र पत्रिकाएं जिसमें रोजगार से संबंधित जानकारी के साथ–साथ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के घटनाक्रम से विद्यार्थी अवगत हो सकें। इसके साथ ही ई–बुक्स, एवं ई जर्नल्स भी विद्यार्थियों को उपलब्ध कराये जाने चाहिए जो एन–लिस्ट (N-LIST) जैसे साफट्वेयर से कम लागत में उपलब्ध हो सकते हैं।
- महाविद्यालयों में शैक्षणिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए पृथक से अतिरिक्त कक्षाएं लगाने का प्रावधान किया जाना चाहिए। साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- महाविद्यालय के आसपास बाउण्ड्रीवाल बनवाई जाना चाहिए ताकि महाविद्यालय की सुरक्षा हो सके साथ ही असामाजिक तत्वों एवं बेवजह के वाहनों के आवागमन पर अंकुश लगाया जा सके, जिससे अध्यापन कार्य प्रभावित न हो। इसके साथ ही महाविद्यालय में चौकीदार नियुक्त किया जाना चाहिए ताकि वह महाविद्यालय की सुरक्षा कर सके।
- नया शैक्षणिक सत्र प्रारंभ होने से पहले स्कूलो में जाकर प्राध्यापकों द्वारा व्याख्यान दिये जाने से न सिर्फ स्कूलों के विद्यार्थी महाविद्यालय शिक्षकों से परिचित हो सकेंगे बल्कि उनको महाविद्यालय में प्रवेश लेने के लिए भी आकर्षित किया जा सकता है।
- महाविद्यालय सकल नामांकन अनुपात बढ़ाने हेतु दूरस्थ क्षेत्र के विद्यार्थियों को आवासीय परिसर उपलब्ध कराया जाना चाहिए एवं महाविद्यालय में व्यावसायिक कोर्स भी चलाए जाने चाहिए जिससे विद्यार्थी स्वरोजगार के लिए प्रेरित हो सकें। निष्कर्ष रूप से आज ग्रामीण क्षेत्र में उच्च शिक्षा के विकास की आवश्यकता है। शासकीय स्तर पर भी उच्च शिक्षा के क्षेत्र में और अधिक प्रयास किये जाने की आवश्यकता है। उच्च शिक्षा की वर्तमान चुनौतियों में अध्यापक, विद्यार्थी, शैक्षणिक संरचना, शैक्षणिक परिवेश एवं प्रशासन प्रमुख घटक हैं इन सभी घटकों के सामूहिक एवं सकारात्मक प्रयास से ही इन चुनौतियों का सामना किया जा सकता है।

References:

1. Naveen Shodh Sansar Feb. 2014
2. Higher Education Essay in www.google
3. Higher Education Wikipedia
4. University News, A weekly Journal of higher education, Addociation of Indian Universities
5. Indian Country summary of higher education